भूमिका

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय *विष्णु नागर के व्यंग्य में राजनीतिक चेतना ('देशसेवा का धंधा और ईश्वर की कहानियाँ' के विशेष सन्दर्भ में)* है। इस शोध अध्ययन का मूल उद्देश्य इन दोनों व्यंग्य संकलनों में राजनीतिक चेतना का विश्लेषण कर उसे उद्घाटित करना है। इन दोनों कृतियों में राजनीतिक चेतना का विश्लेषण कार्य रोचक और चुनौती भरा है| खासकर तब,जब ये दोनों व्यंग्य संकलन अलग-अलग काल में और अलग-अलग मुद्दों को लेकर पर लिखा गए हों। 'ईश्वर की कहानियां' एक सीरीज आधारित व्यंग्य कहानियाँ हैं, जहाँ ईश्वर एक पात्र भी है और विषय भी| धर्म, ईश्वर और समाज तीनों को विषय बनाकर लेखक ने धार्मिक पाखंड, कुरीतियाँ एवं विद्रूपताओं पर करार प्रहार किया है। ये दोनों रचना कृतियाँ हिंदी साहित्य जगत में काफी चर्चित भी रही हैं। 'देशसेवा का धंधा' मूलतः राजनीतिक व्यंग्य संकलन है। देश-समाज में घट रहे समसामयिक घटनाओं को विष्णु नागर ने व्यंग्य के जरिये उद्घाटित किया है। राजनीतिक वर्चस्व, सत्ता द्वारा शोषण, धन-लोलुपता, राजनीतिज्ञों के मिथ्या वादे और दोहरे चरित्र जैसे तमाम मुद्दों पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया गया है|इन दोनों ही रचनाओं में राजनीतिक गतिविधियों, वर्चस्व, पाखंड एवं शोषण करने के अलग-अलग हथकंडों को दर्शाया गया है।

'देशसेवा का धंधा' और **'ईश्वर की कहानियां'** रचनात्मक रूप से एक दूसरे से सम्बद्ध हैं| दोनों में वर्तमान राजनीतिक,धार्मिक,सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का बखूबी चित्रण है| लेखक की निर्भीक तटस्थता और आम लोगों के प्रति पक्षधरता भी द्रष्टव्य है।

मेरी जानकारी में इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मैं स्वयं उन आम लोगों से ताल्लुक रखता हूँ, जो सत्ता एवं व्यवस्था की झूठी दलीलों और खोखली नीतियों में लगातार पिसते जा रहे हैं। जाहिर सी बात है कि इस विषय का सम्बन्ध मेरी संवेदना से भी है। उच्च शिक्षा में आने से पहले मैंने टीवी न्यूज़, अखबार, पत्रिकाओं और साहित्यिक रचनाओं में देखा कि देश के नेता, सत्ताधारी एवं पूंजीपति वर्ग देश की अस्मिता एवं आम लोगों के हितों को तिलांजलि देकर अपनी ही सुविधा संपन्न दुनिया में सुख से रह रहे हैं। मैंने कई राजनीतिक पुस्तकों का भी अध्ययन किया, जिससे मेरी यह सोच और भी पुख्ता हुई। व्यंग्य के माध्यम से राजनीति के षड्यंत्रों का उजागर करना मेरी रुचि भी रही है|मैंने अपने फेसबुक पर कई बार राजनीतिक पोस्ट भी डाली है, जिसका माध्यम व्यंग्य रहा है। इस कारण मैंने इस विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय बहुत पहले ही कर लिया था। इस लिहाज से मैंने व्यंग्य विधा का और रचनाओं में 'देशसेवा का धंधा' और 'ईश्वर की कहानियां' का चुनाव किया।

मैंने इन दोनों रचनाओं में व्याप्त राजनीतिक चेतना को देखने-समझने का प्रयास किया है| यह अध्ययन मूलतः राजनीति,समाज और धर्म को केंद्र में रखकर किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को चार अध्यायों और ग्यारह उप अध्यायों में विभक्त किया गया है|प्रथम अध्याय '**विष्णु नागर का जीवन एवं लेखन**' है। इसमें दो उप अध्याय हैं। इसके पहले उप अध्याय में लेखक का 'जीवन परिचय' है। दूसरा उप अध्याय 'लेखकीय व्यक्तित्व' है। इसमें विष्णु नागर के समस्त लेखन एवं प्राप्त पुरस्कार को दर्शाया गया है। द्वितीय अध्याय '**हिंदी व्यंग्य साहित्य एवं राजनीतिक चेतना**' है। इसे तीन उप अध्यायों में बांटा गया है। प्रथम उप अध्याय 'राजनीतिक चेतना का आशय' है। इसमें राजनीति और चेतना के अन्तर्निहित अर्थ को समझाया गया है। द्वितीय अध्याय 'हिंदी व्यंग्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय' है। इस उप अध्याय में हिंदी साहित्य के व्यंग्य परंपरा को दर्शाया गया है। तीसरे उप अध्याय का शीर्षक 'व्यंग्य में राजनीतिक चेतना का वैशिष्ट्य'। इसके अन्तर्निहित मूलतः स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्य में राजनीतिक चेतना का स्वरुप प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय '**विष्णु नागर के व्यंग्य में राजनीतिक चेतना**' है। इस खंड में कैसे राजनीति समाज एवं देश को किस प्रकार दुष्प्रभावित करती है, उसका प्रत्यक्ष दर्शन है। इसमें तीन उप अध्याय हैं। पहला उप अध्याय 'सामाजिक विद्रूपता' है। इसमें सत्ता पक्ष की कुटिलता, दोहराचरित्र, शोषण-नीतियाँ,झूठे आश्वासन और साम्प्रदायिकता आदि का वर्णन है। तीसरा उप अध्याय 'धार्मिक विडम्बनाएं' है। इस उप अध्याय के अंतर्गत धर्म के नाम पर पाखंड, कुकर्म, अन्धविश्वास और अंधश्रद्धा जैसे तमाम मुद्दों का आंकलन और विश्लेषण है। चौथा अध्याय '**शिल्पगत विश्लेषण**' है| इसमें तीन उप अध्याय हैं। पहला उप अध्याय 'भाषिक अभिव्यक्ति' है। इसके अंतर्गत व्यंग्य की भाषाई पक्ष का उजागर और आंकलन किया गया है। दूसरा उप अध्याय 'कथन की शैली' है। इसमें लेखक के व्यंग्य में अलग-अलग प्रकार की शैलियों का उल्लेख और उसके महत्व को दर्शाया गया है। तीसरा उप अध्याय 'विशिष्ट शब्दावली' है। इस उप अध्याय में लेखक द्वारा प्रयोग उनकी अपनी गढ़ी हुई शब्दावलियों का जिक्र है और संदर्भानुसार उसके निहितार्थ को भी प्रतिपादित किया गया है। अंत में उपसंहार और संदर्भ/सहायक ग्रन्थ सूची दी गई है।

इस लघु शोध प्रबंध के पूर्ण होने के लिए मैं अत्यंत विनम्रता और शालीनता के साथ अपने शोध निर्देशक '**डॉ० सुनील कुमार**' के प्रति अपना विशेष आभार प्रकट करता हूँ। सर ने मेरी रुचि को जान-परखकर व्यंग्य विधा में न सिर्फ शोध करने की सहमति प्रदान की बल्कि निरंतर मेरे शोध अध्यायों का भाषाई संशोधन भी किया। साथ ही साथ समय-समय पर जरूरी सुझाव और निर्देश भी

देते रहे। पुनः मैं सर का हृदय के अन्तःस्थल से आभार प्रकट करता हूँ। सर को आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता है क्योंकि अपने अध्ययन-अध्यापन में व्यस्त रहने और कई प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते रहने के बावजूद उन्होंने अपना समय, सहयोग, मार्गदर्शन और स्नेह प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप यह शोध कार्य पूर्ण रूप से संपन्न हो सका। मुझे इस मुकाम तक पहुँचाने में मेरे माता-पिता, भैया-भाभी एवं अन्य परिवारजनों का विशेष सहयोग रहा है। इन सबके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। इस शोध कार्य का पूर्ण होने में बड़ा हाथ कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. चंद्रकला पाण्डेय और डॉ. विवेक सिंह का भी रहा है। इन सभी गुरुजनों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ। डॉ. जय कौशल और डॉ.जयंत साहु सर का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी राजनीतिक समझ को बेहतर बनाने में सहयोग दिया है।

माना जाता है कि मित्र जीवन के अमूल्य निधि होते हैं। वे हमेशा हर कार्य करने में प्रोत्साहन और मदद करते हैं। ऐसे ही आत्मीय जनों में मैं सबसे पहले प्रियंका कुमारी सिंह का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिसने मेरी कई शंकाओं को दूर करने का प्रयास किया और प्रोत्साहन दिया। मेरी कनिष्ठ मित्र खुशबु ठाकुर का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिसके सहयोग से मेरे आत्मविश्वास को और भी बल मिला। मेरे सहपाठी मनोज प्रसाद रजक, काजल कुमारी सिंह और मदालसा मणि त्रिपाठी का भी बहुत-बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे शोधकार्य में सहयोग किया। अपने क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता के पुस्तकालय कर्मी बिजेंद्र सिंह के प्रति एवं अन्य कर्मियों में सुकेन और रीता दी के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा, जिन्होंने न सिर्फ किताबें उपलब्ध करवायीं बल्कि कई अन्य प्रकार के सहयोग भी किए।

दिनांक : 23. 01. 2018 **मयंक**

स्थान : क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा